बाईबिल परिचय पुस्तकमाला 02

बाईबिल परिचय

शास्त्री जे सी फिलिप

कार्यवाही सम्पादक डा. सनीश चेरियान

बाइबिल परिचय 02

शास्त्री जे सी फिलिप

कार्यवाही संपादक:
शास्त्री सनीश चेरियान
भाषा संपादन:
श्रीमती मोनिका एम स्मिथ

प्रतिलिपि अधिकार: 2022

आनंद भवन प्रकाशन

बाइबल परिचय 02

बाइबल परिचय पुस्तक 1 में हमने पवित्र बाइबल की पृष्ठभूमि और कुछ रूप रेखाएं देखी थीं। आइए हम इस अध्ययन में आगे बढें। पवित्र बाइबल को दो भागों में बांटा गया है। यह हर कोई जानता है। पुराना नियम और नया नियम।

पुराने नियम में 39 पुस्तके हैं। नए नियम में 27 पुस्तके हैं। इन पुस्तकों को लगभग 40 लेखकों ने डेढ़ हजार साल की कालावधि में लिखा था। इसका मतलब यह है कि जिसने पहले पुस्तक की रचना की उसने कभी भी आखिरी पुस्तक के रचयिता को नहीं देखा। पुराना नियम प्रभु यीशु के समय के पहले लिखा गया था। पुराने नियम की पहली पुस्तक उत्पत्ति 1450 इस्वी पूर्व के आसपास लिखी गई। याद रखने के लिए यदि मैं और आप कह दें कि प्रभु यीशु से पंद्रह सौ साल पहले रचना हुई तो उसमें कोई खास गलती नहीं है।

पुराने नियम में पहले पुस्तक की रचना के बाद और भी बहुत सारी पुस्तकों की रचना हुई। इसके लिए परमेश्वर ने पवित्रात्मा की प्रेरणा से बहुत सारे लेखकों को उभारा।

सबसे पहले लेखक प्रभु के महान नायक मूसा थे। सबसे आखिरी लेखक थे मलाकी नामक भविष्यवक्ता। उत्पत्ति से लेकर लगभग 12 पुस्तकें इतिहास हैं। उसके बाद काव्य हैं। उसके बाद भविष्यवाणियाँ हैं।

भविष्यवाणियों में जब हम आते हैं तब सबसे आखिरी पुस्तक है मलाकी। मलाकी नाम के भविष्यवक्ता ने इस पुस्तक की रचना की थी। मलाकी की रचना प्रभु यीशु के समय से लगभग 400 साल पहले हुई। तो इस प्रकार मूसा से लेकर मलाकी तक 29 पुस्तकों की रचना हुई। उसके बाद लगभग 400 साल का ऐसा काल आया जब परमेश्वर ने किसी भी तरह के भविष्यवक्ता नहीं भेजे। किसी भी तरह की भविष्यवाणी लिखी नहीं गई।

बहुत से लोग थे जो परमेश्वर के वचन का अर्थ लोगों को समझाते थे। जिसको अर्थ-प्रस्तावी व्याख्यान कहा जाता है। अंग्रेजी में जिसको बाइबल एक्सपोसिशन कहा जाता है। तो परमेश्वर ने इन 400 सालों में ऐसे बहुत सारे लोगों को उभारा था जो पुराने नियम की 39 पुस्तकों को पढ़ कर उसके अर्थ का प्रस्ताव करते थे। अर्थ-प्रस्तावी व्याख्या या अर्थ-प्रस्तावी

वचन या अर्थ-प्रस्तावी संदेश देते थे। लेकिन इन 400 सालों में परमेश्वर की ओर से सीधे सीधे किसी तरह की भविष्यवाणी या किसी तरह का लिखित वचन नहीं आया। इन 400 सालों के बाद नए नियम की रचना हुई। पुराने नियम की आखिरी पुस्तक और नए नियम की पहली पुस्तक में लगभग 400 साल का अंतराल है, इस बात को हम समझ लें। 400 साल के अंतराल के बाद परमेश्वर ने एक भविष्यवक्ता को भेजा जिन्होंने प्रभु यीशु के आने की घोषणा की।

उस भविष्यवक्ता को हम यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के रूप में जानते हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यह घोषणा की, कि एक मुक्तिदाता आने वाले हैं। मुक्तिदाता का जन्म तो ईस्वी एक में हो गया था लेकिन ईस्वी 30 में प्रभु यीशु ने अपने आप को प्रगट किया। यूहन्ना के शुभ संदेश में हम पढ़ते हैं कि काना में जो विवाह हुआ था उस विवाह में प्रभु यीशु ने अपने आप को प्रगट किया।

उस समय प्रभु 30 साल के थे। इसके बाद प्रभु ने लगभग साढ़े तीन साल सबके सामने सार्वजनिक सेवा की। साढ़े तीन साल के बाद प्रभु यीशु का सूली पर चढ़ाया जाना, दफनाया

जाना और पुनर्जीवन हुआ। पुनर्जीवित होने के 40 दिन बाद तक प्रभु अपने शिष्यों को दर्शन देते रहे, अपने अनुयाइयों को दर्शन देते रहे, और 40 दिन के बाद उनका स्वर्गारोहण हो गया। स्वर्गारोहण के 10 दिन के बाद मसीही मंडली की स्थापना हुई।

स्वर्गारोहण के 10 दिन के बाद पेंटिकोस्ट नाम का यहुदियों का जो त्यौहार था उस दिन पवित्र आत्मा इस संसार में विशेष रूप से पधारे और इस तरह से मसीही मंडली की स्थापना हुई। समय लगभग सन 33 ईसवी था। धीरे धीरे प्रभु यीशु के अनुयाइयों की संख्या बढ़ने लगी। पहले ही दिन 3000 के करीब लोग प्रभु के अनुयाई बन गए और फिर तो अनुयाइयों की संख्या दस हजारों और लाखों में होने लगी।

इनमें से अधिकांश लोग ऐसे थे जिन्होंने कभी प्रभु यीशु को देखा नहीं था। इस कारण प्रभु यीशु के जो खास शिष्य और अनुयायी थे उन्होंने प्रभु यीशु की जीवनी लिखनी शुरू की। वे चाहते थे कि लिखित रूप में प्रभु यीशु की जीवनी और प्रभु यीशु की शिक्षाएं लोगों के हाथ में पहुंचे। पवित्र आत्मा की प्रेरणा से उन लोगों ने ये जीवनियां लिखी जिनमें पहली जीवनी

है मत्ती नामक शिष्य के द्वारा लिखी गई जीवनी। दूसरी पुस्तक है मरकुस नामक व्यक्ति द्वारा लिखी गई जीवनी। तीसरी पुस्तक है लूका नामक वैद्य के द्वारा लिखी गई जीवनी। लूका एक पहुंचे हुए वैद्य और गवेषण करने में, अनुसंधान करने में, बहुत ही अनुभवी व्यक्ति थे।

उन्होंने अनुसंधान के आधार पर लूका नामक शुभ संदेश की रचना की। इसके बाद युहन्ना नामक प्रभु के शिष्य ने युहन्ना का शुभ संदेश लिखा। तब तक डॉक्टर लूका को लगा कि मंडली का, पवित्रात्मा का आगमन, और उसके बाद कृपा युग का आरंभ जो हुआ है उसके बारे में लिखा जाए। तो पवित्र आत्मा की प्रेरणा से उन्होंने प्रेरितों के काम नामक पुस्तक की रचना की। इसके बाद पवित्र आत्मा ने कृपा युग के लिए जो उपदेश हैं वे लिखवाए जो कि रोमियों की पत्री से लेकर यहूदा की पत्री तक में हमें मिलते हैं। इसके बाद पवित्र आत्मा ने यह भी बताया कि भविष्य में क्या होगा, कब होगा, कैसे होगा, इसको हम यूहन्ना के प्रकाशित वाक्य में देखते हैं।

तो प्रभु यीशु के स्वर्गारोहण के बाद मत्ती से लेकर प्रकाशित वाक्य तक की 27 पुस्तकें लिखी गईं। इन पुस्तकों का लेखन

35 ईसवी से लेकर 70 ईसवी के बीच में हुआ। इस प्रकार पुराने नियम की रचना यदि लगभग 1000 साल में हुई तो नए नियम की रचना सिर्फ 35 साल में हुई। लेकिन नया नियम और पुराना नियम मिलकर हमको लगभग 4000 सालों का इतिहास देता है।

लोग जब पुराने नियम को पढ़ते हैं तो उनको लगता है कि यह सब क्या है? इसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं है। 29 पुस्तकों में बहुत अधिक इतिहास, बहुत अधिक शिक्षाएं और बहुत अधिक घटनाएं रेखांकित की गई है। बिना प्रभु के वचन की समझ के पुराने नियम को सही रीति से समझना असंभव है। लेकिन कोई व्यक्ति नए नियम को अच्छी तरह से समझ लेता है तो पुराने नियम की घटनाओं को समझने में उसे बड़ी मदद मिलती है।

इसका मतलब यह है कि पुराने नियम को समझने के लिए नया नियम उपयोगी है और नए नियम को समझने के लिए पुराना नियम पृष्ठभूमि प्रदान करता है। इस कारण हर मसीही विश्वासी को पुराने और नए दोनों नियमों का अध्ययन नियमित रूप से करना चाहिए। नए नियम में बहुत सारी बातें

सिर्फ पुराने नियम के संदर्भ में ही समझी जा सकती है। उदाहरण के लिए गलतियों की पत्री को समझने के लिए पुराने नियम को समझना बहुत जरुरी है। उसी तरह से पुराने नियम में परमेश्वर ने जो कुछ किया वो क्यों किया इसको समझने के लिए नए नियम में रोमियों की पत्री, गलतियों की पत्री आदि को समझना जरूरी है। तो मैं फिर से याद दिला दूं, पुराने नियम को समझने के लिए नया और नए नियम को समझने के लिए पुराने की जरूरत है। आप पूछेंगे यदि इसके लिए वह और उसके लिए यह जरूरी है तो किसको पहले समझा जाए? दरअसल पुराने और नए नियम को एकदम से पूरा कोई भी नहीं समझ सकता है।

पुराने नियम की पृष्ठभूमि को समझ कर उसके आधार पर नए नियम का जब हम अध्ययन करते हैं तब नया नियम काफी कुछ समझ में आने लगता है। यह जो समझ में आने लगता है इसके आधार पर वापिस जाकर पुराने नियम को देखेंगे तो पुराना नियम और अधिक स्पष्ट हो जाता है। यह और अधिक जो स्पष्ट हो जाता है उसके प्रकाश में आकर नया नियम पढेंगे तो वो भी और अधिक स्पष्ट हो जाएगा। इस तरह से पुराने नियम और नए नियम का अध्ययन हर विश्वासी

के लिए सारे जीवन भर एक समर्पण होना चाहिए। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह जो पृष्ठभूमि मैंने आपके सामने रखी है यह आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी और इसके आधार पर यह जो पठन माला है इसमें हम शायद 60 से 70 पुस्तकें निकालेंगे।

मुझे उम्मीद है कि यह पठन माला हर तरह से आपकी मदद करेगी। प्रभु इन चीजों को समझने के लिए आपकी मदद करे। यदि यह आपको मिली हमारी पहली पुस्तक है, या यह हमारे द्वारा रची गई पहली पुस्तक है जिसे आप देख रहे हैं तो इस पुस्तक के अंत में यह जानकारी दी गई है कि बाकी सारी पुस्तकें आप कहां से और कैसे प्राप्त कर सकते हैं। याद रखिये, आपके स्मार्टफोन पर बड़े आराम से डाउनलोड करके आसानी से आप इन पुस्तकों को पढ़ सकते हैं।

इनकी रूप रेखा इस तरह से बनाई गई है और रचना इस तरह से की गई है कि आप इनको आराम से पढ़ सकते हैं। प्रभु आपकी मदद करें। हां एक अनुरोध है। हम लोग स्मार्टफोन आदि पर तमाम तरह का कचरा देख कर दूसरों

के साथ शेयर करते हैं। इस तरह से दरअसल उनके जीवन को नुकसान पहुंचाते हैं।

कचरा दूसरों के साथ शेयर करने के बदले ठोस आत्मिक सामग्री उनके साथ बांटे और इसलिए हमारा अनुरोध है कि इस इलेक्ट्रॉनिक पुस्तिका को कम से कम अपने दस मित्रों को जरूर शेयर कर दे उससे ज्यादा कर सकेंगे तो और भी अच्छा है। अनुग्रह को उस दास के समान जिसने उसको जो सिक्का मिला था उसे गाड़ दिया था। इस तरह से गाड़ कर न रखे प्रभु आपकी मदद करें।

प्रतिलिपि अधिकार: 2022

आनंद भवन प्रकाशन